

शोध प्रविधि पर कार्यशाला का उद्घाटन

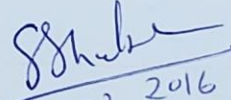
11 मार्च 2016 जबलपुर

स्थानीय शासकीय मानकुंवरबाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय में शोध प्रविधि एवं शोध के नये आयाम विषय पर आयोजित द्वि दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. के.एल. जैन, अतिरिक्तसंचालक के मुख्यातिथ्य में तथा डॉ. पी.के. मिश्र, अधिष्ठाता कृषि संकाय जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर की अध्यक्षता में तथा डॉ. भूपेन्द्र निगम के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। विषय प्रवर्तन करते हुए प्राचार्य डॉ. उषा दुबे ने कहा – शोध महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है, वर्तमान में 128 शोधार्थी कार्य कर चुके हैं – 70 शोध उपाधि, 400 प्रकाशन अनुसंधान होते रहे हैं। इस कार्यशाला में शोधार्थियों को नये आयाम समाज के लिए शोध उपयोगी सिद्ध होंगे। – शोध के नये आयाम कौन-कौन से हैं, शोध स्तरीय होना चाहिए। साहित्य के पुनर्लेखन पर विचार अवगत कराना द्वि – द्विवसीय कार्यशाला का उद्देश्य है। माननीय मुख्य अतिथि डॉ. के.एल. जैन महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि – हमें आत्म चिंतन करना चाहिए। संख्या बढ़ाने की दृष्टि से रिसर्च न करायें। मौलिकता का परिचय दें तथा कुछ नया करें।

विशिष्ट अतिथि प्रमुख वक्ता डॉ. भूपेन्द्र निगम – व्यक्ति अपने जीवन को जीता कम ढोता ज्यादा है। प्रमुख वक्ता डॉ. अनिल ब्यौहार संगीत के प्राध्यापक खैरागढ़ ने शोध प्रविधि पर अपने विचार रखते हुए कहा बिना पूरी तैयारी के शोध क्षेत्र में विद्यार्थी को न रखें। भाषा मौलिक चिंतन की पात्रता के बाद शोध करें।

कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. पी.के. मिश्र ने कार्यशाला पर अपना अभिमत प्रस्तुत किया और कहा – ऊर्जा के स्रोत अनन्त है, हमारे सामने एक चुनौती है जो प्राकृतिक सम्पदा है, रिसर्च उस पर किया जाता है। वैज्ञानिक क्षेत्र के आयाम पर विचार करते हैं। दिनों – दिन जमीन कम होती जा रही है, यह एक चुनौती है, इसे हम शोध के द्वारा सामने लाते हैं। कार्यक्रम का संचालक करते हुए शोध प्रकोष्ठ प्रभारी स्मृति शुक्ल ने कहा ज्ञान का संबंध जिज्ञासा व्यक्ति से है शोध जीवन से संबंधित पक्ष प्रस्तुत करता है। माननीय अतिथियों के प्रति जे.के. गुजराल ने आभार व्यक्त किया। प्रतिवेदक के रूप में डॉ. नीना उपाध्याय उपस्थित रहीं।

प्रथम बौद्धिक सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पवन अग्रवाल ने अनुसंधान के विविध रूपों एवं तथ्यों का विश्लेषण कर शोध के स्वरूप पर विशेष टिप्पणी की। डॉ. इला घोष ने कहा ज्ञान परम्पवित्र है। शोध उच्च शिक्षा का प्रमुख अंग है। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए गार्गीशरण मिश्र ने शोध की प्रविधि पर विस्तृत व्याख्यान दिया। शोध विषय की प्रस्तावना आवश्यकता लाभ व महत्व पर अपने विचार व्यक्त किये। इस सत्र की प्रतिवेदक डॉ. मीनू मिश्रा रहीं, कार्यक्रम का संचालन डॉ. नुपुर निखिल देशकर ने किया। और आभार डॉ. अर्चना देवलिया द्वारा दिया गया। यू.जी.सी. प्रभारी डॉ. जे.के. गुजराल, डॉ. टी.आर. नायडू सहित समिति के सभी सदस्य तथा महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, बाहर से आये प्राध्यापक, शोधार्थी उपस्थित रहे।


11.03.2016